संत रामपाल जी की अज्ञानता ।

गुरु नानक जी ने काबा को शिव मंदिर कहा है ?

रिसर्च एवं प्रस्तुति : अब्दुल अज़ीम

क्या गुरु नानक जी ने काबा को शिव मंदिर कहा है ? संत रामपाल जी अज्ञानता

कबीर पंथ के प्रसिद्ध प्रचारक **"संत रामपाल जी,** अपनी पुस्तक **"मुसलमान नहीं समझे ज्ञान कुरान"** में लिखते हैं :

"मक्का महादेव का मंदिर है"

सिख धर्म की पुस्तक भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण है :- "साखी मदीने की चली" हिन्दी वाली के पृष्ठ 262 पर श्री नानक जी ने चार इमामों के प्रश्न का जवाब देते हुए कहा है :

आखे नानक शाह सच्च, सुण हो चार इमाम ।
मक्का है महादेव का, ब्राह्मण सन सुलतान ।।

(जन्म साखी, सखी मदीने की, पृष्ठः २६२)

भावार्थ :- सतगुरू नानक देव जी ने चार इमामों से चर्चा करते हुए कहा कि जिस मक्का शहर में जो काबा (मंदिर) है जिसको आप अपना पवित्र स्थान मानते हो। वह महादेव (शिव जी) का मंदिर है। इसमें सब देवी-देवताओं की मूर्तियाँ (बुत) थी। उसकी स्थापना करने वाला सुल्तान (राजा) ब्राह्मण था। बाद में सब मूर्तियाँ उठा दी गई थी। नबी इब्राहिम व हजरत इस्माईल (अलैहि.) ने इसका पुनः निर्माण करवाया था। **(मुसलमान नहीं समझे ज्ञान कुरान, पृष्ठः २०)**

बहुत से हिंदू भी अपने दावे में दृढ़ता उत्पन्न करने के प्रयास में संत रामपाल की उपरोक्त उल्लेखित बात की सहायता लेते हैं कि गुरु नानक देव जी ने भी मक्का को शिव मंदिर कहा है, परंतु संत रामपाल जी अथवा हिंदू भाई सिख मजहब के सिद्धांत से परिचित होते तो वे कभी भी गुरु नानक देव जी पर यह आरोप ना लगाते, हम यहां संत रामपाल को अथवा उनके मानने वालों को तथा हिंदुओं को यह चुनौती दे रहे हैं कि यदि वे किसी एक सिख मजहब के निष्पक्ष एवं नामवर विद्वान की उपर्युक्त साखी पर सहमति दिखा दें तो हम भी स्वीकार कर लेंगे कि वास्तव में मक्का प्रचलित शिव मंदिरों की तरह ही एक शिव मंदिर है अथवा था। वे कभी नहीं दिखा सकते अपितु सीख विद्वान इस साखी को हिंदुओं द्वारा प्रक्षिप्त मानते हैं, इसका कारण निम्नलिखित है :

गुरु ग्रंथ साहिब में मक्का के प्रति वर्णित है :

ਮਨੁ ਕਰਿ ਮਕਾ ਕਿਬਲਾ ਕਰਿ ਦੇਹੀ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ,ਭੈਰਉ ਅੰਗ ੧੧੫੮)

हिंदी

मनु करि मका किबला करि देही ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, राग भैरउ, पन्ना: ११५८)

अर्थात:- मन को मक्का और शरीर को किबला बना लो।

किंतु शिव (महादेव) जी के प्रति वर्णित है :

ਸਿਵ ਸਿਵ ਕਰਤੇ ਜੋ ਨਰੁ ਧਿਆਵੈ॥ ਬਰਦ ਚਢੇ ਡਉਰੂ ਢਮਕਾਵੈ॥ (ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ, ਗੋਂਡ ਅੰਗ ੮੭੪)

हिंदी

सिव सिव करते जो नरु धिआवै ।। बरद चढे डउरू ढमकावै ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, राग गोंड, पन्ना: ८७४)

अर्थात:- जो नर 'शिव-शिव' करते हुए उसका ध्यान करते हैं, वे बैल पर सवार होकर डमरू बजाते रहते हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब की उपरोक्त दोनों वाणी में अंतर देख सकते हैं, मक्का के प्रति गुरु नानक देव जी कहते हैं कि अपने हृदय को मक्का बना लो, अर्थात ये मनुष्य की उन्नति अथवा मोक्ष का साधन है। तथा शिव (महादेव) जी का जाप करने वालों के लिए कहा कि यह बैल पर सवार होकर डमरू बजाते रहते हैं, परंतु बैल पर सवार होकर डमरू बजाना मनुष्य की उन्नति अथवा मोक्ष प्रतीक नहीं है।

अतः गुरु ग्रंथ साहिब की उपरोक्त दो वाणी यह सिद्ध करती है कि मक्का से महादेव (प्रचलित प्रतिमा वाले शिव) का कोई संबंध नहीं है, परंतु जन्म साखी में मक्का को महादेव का मंदिर कहा गया है यह विरोधाभास है। विरोधाभास होने पर **(गुरु ग्रंथ साहिब, राग गउड़ी, पृष्ठ: ३०८) एवं (गुरु ग्रंथ साहिब, राग धनासरी, म: ४ पृष्ठ : ६६७)** इन दो स्थानों के आधार पर यह तय होता है कि यदि कोई बात गुरुवाणी से टकराए तो उस बात को त्याग दिया जाएगा जो गुरुवाणी से टकरा रही हो तथा गुरुवाणी को प्राथमिकता दी जाएगी एवं सत्य माना जाएगा।

यदि संत रामपाल जी इन बातों से तथा सिख मजहब के इस सिद्धांत से परिचित होते तो वह कभी भी इस तरह की पथभ्रष्टता फैला कर अपनी अज्ञानता का प्रमाण न देते। ईश्वर हमारे हिंदू भाइयों को भी सद् बुद्धि प्रदान करे हम उन्हें यह भी यह बताना चाहते हैं कि **"दशम ग्रंथ साहिब"** इस ग्रंथ की महत्वता भी गुरु ग्रंथ साहिब के समान है, इस ग्रंथ की निम्नलिखित वाणी में ब्रह्मा विष्णु महेश (महादेव) को नाशवान कहा गया है :

ਕਾਲ ਪਾਇ ਬ੍ਰਹਮਾ ਬਪੁ ਧਰਾ॥ ਕਾਲ ਪਾਇ ਸਿਵਜੂ ਅਵਤਰਾ॥ ਕਾਲ ਪਾਇ ਬਿਸਨ ਪ੍ਰਕਾਸਾ॥ ਸਕਲ ਕਾਲ ਕਾ ਕੀਯਾ ਤਮਾਸਾ॥ (ਸ੍ਰੀ ਦਸਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ, ਪੰਨਾ ੧੩੮੬)

हिंदी

काल पाइ ब्रहमा बपु धरा। काल पाइ शिवजू अवतरा।
काल पाइ करि बिशन प्रकाशा। सकल काल का किया तमाशा।।

(दशम ग्रंथ साहिब, पन्ना: १३८६)

अर्थात:- काल की परिधि में ही ब्रह्मा ने शरीर धारण किया। और काल के वशीभूत शिव अवतरित हुआ। काल में ही विष्णु प्रकाशित हुआ। परंतु (हे महाकाल !) तुमने सारों का तमाशा बना दिया है।

दशम ग्रंथ की उपयुक्त वाणी में प्रयुक्त **"काल"** शब्द का सिख विद्वान तीन अर्थ करते हैं : १. ईश्वर २. समय ३. मौत

ईश्वर : ईश्वर के हुक्म से ही ब्रह्मा ने शरीर धारण किया। और ईश्वर के हुक्म से ही शिव अवतरित हुआ। ईश्वर के हुक्म से ही विष्णु प्रकाशित हुआ। यह सब ईश्वर का लगाया हुआ तमाशा है। साधारण व्यक्ति भी यह जानता है कि तमाशे का अंत अवश्य होता है अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश नाशवान हैं।

समय : समय के दायरे में ही ब्रह्मा ने शरीर धारण किया। और समय के दायरे में ही शिव अवतरित हुआ। समय के दायरे में ही विष्णु प्रकाशित हुआ। यह सब समय का तमाशा है। अर्थात इनका समय खत्म होते ही यह तमाशा भी खत्म हो जाएगा अर्थात सब नाशवान हैं।

मौत : मौत के दायरे में ही ब्रह्मा ने शरीर धारण किया। और मौत के दायरे में ही शिव अवतरित हुआ। मौत के दायरे में ही विष्णु प्रकाशित हुआ। यह सब मौत का तमाशा है। अर्थात सब नाशवान हैं।

तीनों अर्थों में से चाहे कोई भी अर्थ लिया जाए सिद्ध यही होगा कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश (महादेव) नाशवान हैं। अतएव उन हिंदू भाइयों से निवेदन है जो एक प्रक्षिप्त साखी के आधार पर मक्का को महादेव मंदिर स्वीकार कर सकते हैं, तो गुरु वाणी के आधार पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश को नाशवान भी स्वीकार करो।

धन्यवाद।

दिनांक : ०९/०४/२०२४

- **संपर्क सूत्र : email : islamdharmkisattyata@yahoo.com**

- **https://www.youtube.com/channel/UCeyCLxXCrIUETXDW11J1f5Q**

ISLAM DHARM KI SATTYATA